International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्राथमिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

वन्दना सिंह
शोधार्थी
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. हेमन्त खन्डई
सतत शिक्षा विभाग
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोधकार्य में सीहोर जिले में प्राथमिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों तथा अभिभावको के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस हेतु तय किए गए उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसके माध्यम से प्रयोज्यों को प्रश्नावली देकर उनसे उत्तर प्राप्त किये गये हैं। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सीहोर जिले में स्थित विद्यालयों को लिया गया है, इन चयनित विद्यालयों में से कुल 100 विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों का साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि के द्वारा चयन किया गया। सांख्यिकी गणना एवं परीक्षण से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया गया। छात्र तथा छात्राओं के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तथ्यात्मक पदः प्राथमिक शिक्षा, विद्यार्थी, अभिभावक, दृष्टिकोण

प्रस्तावना –

मनुष्य की प्रवृत्ति सदैव से ही जिज्ञासु रही है जिसके कारण वह नित नए ज्ञान को प्राप्त करने हेतु उत्सुक रहता है और इससे ही शोध कार्यों को प्रोत्साहन मिलता है। हमारा देश कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली पंरपराओं पर सदैव से ही

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

गर्व करता रहा है मनुष्य विधाता की अनमोल कृति है तथा यह प्रकृति के अन्य जीवों से विशिष्टता लिए है। इसकी विशिष्टता का प्रमुख कारण मानव की चिंतनशील, सृजनात्मक, जिज्ञासु व अन्वेषक प्रवृत्ति है जिसके कारण वह नित्य नए सृजन कार्यों में लगा रहता है। वास्तव में उसकी जन्मजात प्रवृत्ति पशु के समान होती है किन्तु समाज में रहकर शिक्षा के माध्यम से उसका सामाजीकरण होता है। वह अपने अनुभवों व स्वविवेक से ज्ञान करता है। ज्ञान का प्रमुख आधार वास्तविक तथ्यों और सिद्धांतों से परिचित होना होता है। वर्तमान समय में हमारा देश मूल्यों के संकट के दौर से गुजर रहा है। आज भौतिकता अपने पैर पसारे है जिसके परिणामस्वरूप मूल्य संकुचित अवस्था में रह गए हैं। भारत देश अपनी सभ्यता व संस्कृति के लिए सदियों से विश्व में जाना जाता है और इसका श्रेय उन विभिन्न मूल्यों को ही जाता है जिन्होंने उसे अक्षुण्ण बनाए रखा है। विभिन्न शिक्षाशास्त्री व मनीषी सदैव से ही मानव कल्याण हेतु अर्थक प्रयास करते आए हैं और मानव कल्याण हेतु जीवन मूल्यों का विशेष महत्व है। जब भी देश व समाज में मूल्यों का महत्व घटा है, सभ्यता व संस्कृति का पतन ही हुआ है।

मनुष्य में विभिन्न तथ्यों को ज्ञात करने की जिज्ञासा होती है और इसी जिज्ञासा के फलस्वरूप वह अपने ज्ञान को बढ़ाता है। जैसे–जैसे ज्ञान की मात्रा बढ़ती जाती है वह उसे सुनियोजित करने का प्रयास करता है ओर यही प्रयास अनुसंधान का रूप ले लेता है। व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान को प्रामाणिकता प्रदान करने हेतु अनुसंधान करता है तथा इन अनुसंधानों के निष्कर्ष ही समाज के लिए उपयोगी होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में समुदाय में रहता है और इस हेतु वह समाज से अपेक्षा रखता है कि उसे अपने समुदाय से सरंक्षण प्राप्त हो। अतः वह जिस समाज का हिस्सा होता है उसके मूल्य वांछनीय, महत्वपूर्ण और आदरपूर्ण होने चाहिए।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मापदण्ड उस देश की शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप एवं स्थिति को माना जाता है। इसी दृष्टिकोण के अनुसार किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा अपना विशिष्ट स्थान रखती है, क्योंकि यही शिक्षा की प्रथम सीढ़ी होने के नाते राष्ट्र की भावी उच्च शिक्षा की पृष्ठभूमि का निर्माण करती है। राष्ट्रीय जीवन से निरक्षरता का प्रजातंत्र के निर्माण के लिये प्रगतिशील मार्ग प्रशस्त करने के उददेश्य से

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भारतीय संविधान की धारा 45 में संवैधानिक निर्देशों का इस प्रकार से प्रतिपादन किया है। ''राज्य इस संविधान के क्रियान्वित किये जाने के समय से दस वर्ष के अंतर्गत जब तक कि सभी बालक 14 वर्ष की आयु पूर्ण नही कर लेगें, निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा।'' इस संवैधानिक निर्देश के प्रतिरोपण से स्पष्ट होता है कि इसका मूल उददेश्य शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना था।

लेकिन संविधान के लागू होने के 10 साल तक भी भारत अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के चलते अपने सभी 6–14 साल तक के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाने में असमर्थ रहा। जिसके चलते यह समय सीमा समय–समय पर बढ़ाई जाती रही। संवैधानिक रूप से भारत सरकार शिक्षा को मूलभूत अधिकार के रूप में (अनुच्छेद 21 (ए) संविधान के 86 वे संशोधन में दिसम्बर 2002 में जोडा गया, एवं संसद द्वारा जुलाई 2009 में पारित किया गया) स्वीकार कर 6–14 साल के प्रत्येक बच्चे को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा देने के लिये बचनबद्ध है।

इस जटिलता को दूर करने के लिये भारत सरकार ने स्थानीय निकायों, जन समूह एवं जनता की सरकारी कार्यो मे भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु संविधान में 73 वाँ एवं 74 वाँ संशोधन किया संविधान के 73 वाँ संशोधन (1982) के अनुसार स्थानीय पंचायतों के निर्माण एवं पंचायतों का गाँव (ग्रामीण) स्तर पर संघीय कार्यों में सामाजिक भागीदारी को सुनिश्चित किया गया है। 74 वाँ संशोधन में शहरों में नगर पालिका का निर्माण भी इसी उद्देश्य के लिये किया गया है। राज्यों से अपेक्षा की गई है कि वह इन स्थानीय निकायों के साथ मिलकर इन्हें अधिकार, कर्तव्य एवं वित्त संबंधी हस्तक्षेप करने की भागीदारी सुनिश्चित करें। इसी से भारत में शिक्षा के विकेन्द्रीकरण की शुरूआत मानी गयी।

सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ऐ.) की सफलता हेतू सरकार ने पहले से ही शिक्षा में समुदाय की भागीदारी पर बल दिया है। इसके फलस्वरूप राज्य, जिला, ब्लॉक, तहसील एवं ग्राम स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिकारो एवं कर्तव्यों का विकेन्द्रीकरण कर सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित किया गया है। ग्राम स्तर पर विद्यालय के प्रमुख फैसले लेने अमलीकरण करने एवं कार्य प्रणाली पर निगरानी करने हेतु स्थानीय निकायों ग्रामीण

शिक्षा समिति (व्ही.ई.सी.), पालक शिक्षक संघ (टी.पी.ए.) स्कूल प्रशासन समिति (एस.एम.पी.) माता शिक्षक संघ (एम.टी.ए.) समितियों का निमार्ण सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ऐ.) के अंतर्गत किया गया है। प्रस्तुत शोध में इन्हीं स्थानीय निकायों की ओर से प्राथमिक शिक्षा क्रियान्विकरण करने और सफल बनाने में किये गये प्रयासों को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

किसी भी शोध की संकल्पना के लिये पूर्व शोधों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध की संकल्पना निम्न पूर्व शोधों के अध्ययन के आधार पर की गई है। **डेका (2003)** ने पंचायती राज निकायों के कार्यान्विकरण का भारतीय ग्रामीण परिक्षेत्र में अध्ययन किया और शोध के मुख्य निष्कर्षो में विकेन्द्रीकरण की भूमिका पर बल देने का परामर्श दिया। उन्होनें समुदाय की भागीदारी में तंत्र का असहयोग, सदस्यों के मनमाने रवैये, सदस्यों की स्थिरता का अभाव, निर्णय लेने में विलंब, पारितोषिक मिलने में विलंब आदि जैसे कारणों को शिक्षा के विकेन्द्रीकरण में अवरोधी तत्व बताया। **पटेल तथा अवस्थी** (2006) ने सामुदायिक सदस्यों एवं ग्रामीण शिक्षा समिति एवं अन्य समितियों का सर्व शिक्षा अभियान के संदर्भ में गुजरात के साबरकांठा, नवसारी, पंचमहल एवं भावनगर जिलों में से यादृच्छिक विधि से चुने गये प्रतिदर्श ब्लॉकों में समितियों के सकारात्मक प्रभाव को सर्व शिक्षा अभियान को सफल बनाने के निष्कर्षों को प्रतिपादित किया गया। इस शोध के अंतर्गत प्रशिक्षण की प्रभाविता, नवसारी व भावनगर के कई ब्लॉकों में समुदाय की प्रभावी भागीदारी, पंचमहल व सांबरकाठा के कई विद्यालयों में अभिलेखों का पूर्ण ना होना, इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष थे।

सांख्यकीय विश्लेषण :–

संकलित न्यादर्श का सारणीकरण करके उसका सांख्यिकी विश्लेषण किया गया। आवश्यकतानुसार मध्यमान, मानक विचलन एवं अन्य आवश्यक सांख्यिकी गणना एवं परीक्षण का उपयोग किया गया।

न्यादर्श

इस शोधकार्य में सीहोर जिले में प्राथमिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस हेतु तय किए गए उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसके माध्यम से प्रयोज्यों को प्रश्नावली देकर उनसे

उत्तर प्राप्त किये गये हैं। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सीहोर जिले में स्थित विद्यालयों को लिया गया है, इन चयनित विद्यालयों में से कुल 100 विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों का साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि के द्वारा चयन किया गया है।

उपकरण – स्वनिर्मित प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी

शोध की परिकल्पनाएं :–

1. छात्र तथा छात्राओं का प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता है।
2. विद्यार्थियो तथा अभिभावकों का प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

परिणामों की व्याख्या :–

तलिका – 01

छात्र तथा छात्राओं का प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकर्ता का मान	
					0.05	0.01
छात्र	50	22.80	3.65	0.39	2.01	2.63
छात्राएं	50	23.10	4.04			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि छात्र तथा छात्राओं के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 सत्य सिद्ध होती है।

तलिका – 02

विद्यार्थियों तथा अभिभावकों का प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकर्ता का मान	
					0.05	0.01
विद्यार्थी	100	21.35	4.45	2.58	2.01	2.63
अभिभावक	100	22.95	3.85			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 02 सत्य सिद्ध होती है।

परिणाम

छात्र तथा छात्राओं के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के मध्य प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया गया तथा अभिभावकों में, विद्यार्थियों की तुलना में प्राथमिक शिक्षा के प्रति बेहतर दृष्टिकोण पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भारत सरकार (2006), सर्व शिक्षा अभियान, अधिसूचना 2004 व 2005 नई दिल्ली भारत सरकार

अग्रवाल, जे.सी. (2012) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

आलोक, टी.डी.एस. (2003) : सांस्कृतिक पत्रकारिता, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला

आनन्द, रचना (2013/2014) : किशोरावस्था एवं युवा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

अस्थाना, विपिन (1999) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्याकंन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, नवीनतम् संस्करण

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

अस्थाना, बिपिन, श्रीवास्तव विजया, अस्थाना निधि (2013) : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अगव्राल पब्लिकेशन्स, आगरा

भटनागर, आर.पी. (1995) : शिक्षा अनुसंधान : विधि एवं विश्लेषण, ईगल बुक्स इंटरनेशनल, मेरठ

गुप्ता, एस.पी. (2005) : सांख्यिकीय विधियाँ (व्यवहापकर विज्ञानों में), शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

कपिल. एच.के. (2008) : सांख्यिकीय के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7

कुप्पुस्वामी. बी. (1990) : बाल–व्यवहार और विकास, कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि. दिल्ली

मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ (2012) : सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली–7

पाण्डेय, रामशकल एवं मित्र करूणाशंकर (2008) : मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

पंड्या, शकुन्तला (2014) : विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के प्रेरक विधाएँ, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर

सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (2007) शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2

सक्सेना, एन.आर. स्वरूप एवं चतुर्वेदी, शिखा (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ क्रमांक 163, 164

शर्मा, पी.डी. (2016) : भारत में शिक्षा स्तर, समस्याएँ एवं मुद्दे, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

शर्मा, आर.ए. (1998) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, निकट गवर्नमेन्ट कॉलेज, मेरठ, नवीन संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 94, 95

शर्मा, आर.के. एवं दुबे, एस.के. : मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाश मन्दिर प्रा.लि., आगरा

शर्मा, आर.के., बरौलिया, ए., शर्मा एच.एस., एवं तिवारी, मूल्य शिक्षा एवं मानवाधिकार, राधा प्रकाश मन्दिर प्रा.लि., आगरा

श्रीवास्तव, डी.एन. (2007/2008) : सांख्यिकी एवं मापन, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–7

श्रीवास्तव, मेघा (2008–09) “विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का एक अध्ययन”, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (लघु शोध प्रबन्ध)

श्रीवास्तव. पी, (2017) "निचली बस्ती के किशोरों के मध्य नैतिक निर्णय", बिहेवियरल सांइटिस्ट (बाइ–एनुअल), वाल्यूम 18, नं 2, पृ. क्र. 131–136

सिंह, अरूण कुमार (2012) : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली